लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय, तिरुवनंतपुरम – 695 001

आवरण चित्र

नेपियर संग्रहालय

नेपियर संग्रहालय, जिसे सरकारी कला संग्रहालय भी कहा जाता है, केरल की राजधानी तिरुवनंतपुरम में स्थित एक कला और प्राकृतिक इतिहास संग्रहालय है । संग्रहालय के मैदान में प्रसिद्ध तिरुवनंतपुरम चिड़ियाघर भी है, जो भारत के सबसे पुराने प्राणि उद्यानों में से एक है । चिड़ियाघर 1857 में स्थापित किया गया था और 55 एकड़ (220,000 वर्ग मीटर) पर फैला हुआ है । संग्रहालय का नाम पूर्व मद्रास गवर्नर जनरल, जॉन नेपियर के नाम पर रखा गया था । संग्रहालय को मद्रास सरकार के परामर्श वास्तुकार रॉबर्ट चिशोलम द्वारा डिजाइन किया गया था और इसका निर्माण 1880 में पूरा हुआ था । नेपियर संग्रहालय अपने अद्वितीय अलंकरण और गॉथिक छत और टकसालों के साथ स्थापत्य शैली के साथ शहर में एक मील का पत्थर है । इंडो-सरैसेनिक संरचना भी एक प्राकृतिक एयर कंडीशनिंग प्रणाली समेटे हुए है । केरल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत यहां पूरे प्रदर्शन में है । संग्रहालय की स्थापत्य शैली भारतीय, चीनी, केरल और मुगल वास्तुकला का एक मिश्रण है । संग्रहालय में पुरातात्विक और ऐतिहासिक कलाकृतियों, कांस्य मूर्तियों, प्राचीन आभूषण, एक मंदिर रथ और हाथी दांत की नक्काशी का एक दुर्लभ संग्रह है । इसमें श्री चित्रा आर्ट गैलरी भी शामिल है, जिसमें राजा रवि वर्मा और निकोलस रोरिक की चित्रकला प्रदर्शित हैं, साथ ही मुगल और तंजौर कला के उदाहरण भी मिलते हैं । भारतीय महाकाव्य महाभारत और रामायण के दृश्यों को जापानी छाया-चित्र चमड़े का उपयोग करके संग्रहालय में दर्शाया गया है । संग्रहालय के परिसर में समृद्ध और विविध प्रकार के पेड़-पौधे हैं । केरल में सबसे पुराना जीवित रबर का पेड़ जो सीलोन (वर्तमान श्रीलंका) से लाया गया था और 1876 में तिरुवितांकूर के महाराजा विशाखम तिरुनाल द्वारा लगाया गया था, संग्रहालय के परिसर में मौजूद है ।

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

श्रुति

हिंदी गृह पत्रिका

(26वां अंक)

(वर्ष 2019-2020 का संयुक्तांक)

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल का कार्यालय,

तिरुवनंतपुरम - 695001

हिंदी के प्रति महात्मा गांधी का प्रेम बड़ा गहरा था । आइए जानते हैं राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के हिंदी के प्रति विचार...

"राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है ।"

"हृदय की कोई भाषा नहीं है, हृदय-हृदय से बातचीत करता है और हिंदी हृदय की भाषा है ।"

"हिंदुस्तान के लिए देवनागरी लिपि का ही व्यवहार होना चाहिए, रोमन लिपि का व्यवहार यहां हो ही नहीं सकता ।"

"हिन्दी भाषा का प्रश्न स्वराज्य का प्रश्न है ।"

"अखिल भारत के परस्पर व्यवहार के लिए ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे जनता का अधिकतम भाग पहले से ही जानता-समझता है और हिंदी इस दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है ।"

"राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र उन्नति के लिए आवश्यक है ।"

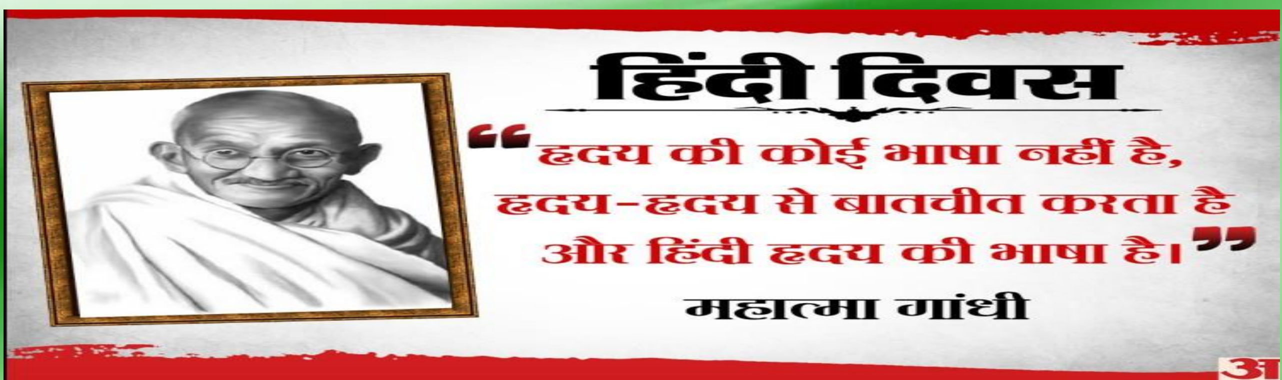

पत्रिका परिवार

मुख्य संरक्षक

श्रीमती जी सुधर्मिनी
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक

श्री एन वी मात्तच्चन
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदात्री समिति

श्री बीजु जोसफ
उप महालेखाकार

श्री एम ए राजन
उप महालेखाकार

श्रीमती वल्सम्मा तोमस
उप महालेखाकार

संपादक मंडल

श्री बिजु पी सी
वरिष्ठ लेखा अधिकारी

श्रीमती के आर रोहिणी
हिंदी अधिकारी, संपादक

श्रीमती निधि लक्ष्मी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री भारत भूषण
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री प्रतीक कुमार
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

रचनाकारों के विचारों से संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए रचनाकार स्वयं उत्तरदायी होंगे।

संपादक मंडल

Dedicated to Truth in Public Interest

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	रचना	रचनाकार
1.	हिंदी दिवस 2019 के अवसर पर भारत के माननीय गृह मंत्री जी का संदेश	
2.	संरक्षक की कलम से......	
3.	मुख्य संपादक की कलम से.....	
4.	संपादक मंड़ल की ओर से.....	
5.	दौरे समां	भारत भूषण, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
6.	विश्व में आतंकवाद का प्रभाव	के शांति, सहायक लेखा अधिकारी
7.	बचपन की यादें	के शांति, सहायक लेखा अधिकारी
8.	खुल रहें है नींद के सीक्रेट्स	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
9.	विश्व में आतंकवाद का प्रभाव	रोज़ अली, डेटा एंट्री ऑपरेटर
10.	हमें भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए। क्यों ?	कविता सुरेश, वरिष्ठ लेखाकार
11.	इंद्रधनुष	रजनीकांत सिंहा, सहायक लेखा अधिकारी
12.	मेरे जीवन की शिक्षाएँ एवं अनुभव	त्रिलोक, लेखाकार
13.	न्यूटन	भारत भूषण, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
14.	वो कौन था	भारत भूषण, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
15.	आम प्रयोग के अंग्रेज़ी-हिंदी वाक्यांश	
16.	विभिन्न कार्यालयीन गतिविधियों के चित्र	
17.	भारत का राजभाषा की दृष्टि से क्षेत्रवार वर्गीकरण	
18.	भारत के राज्यों में बोली जानेवाली भाषाएं/बोलियां	
19.	केरल के मानचित्र में प्रधान महालेखाकार (ले व ह), केरल के कार्यालयों के स्थान	

सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस 2019
के अवसर पर माननीय गृह मंत्री जी का संदेश

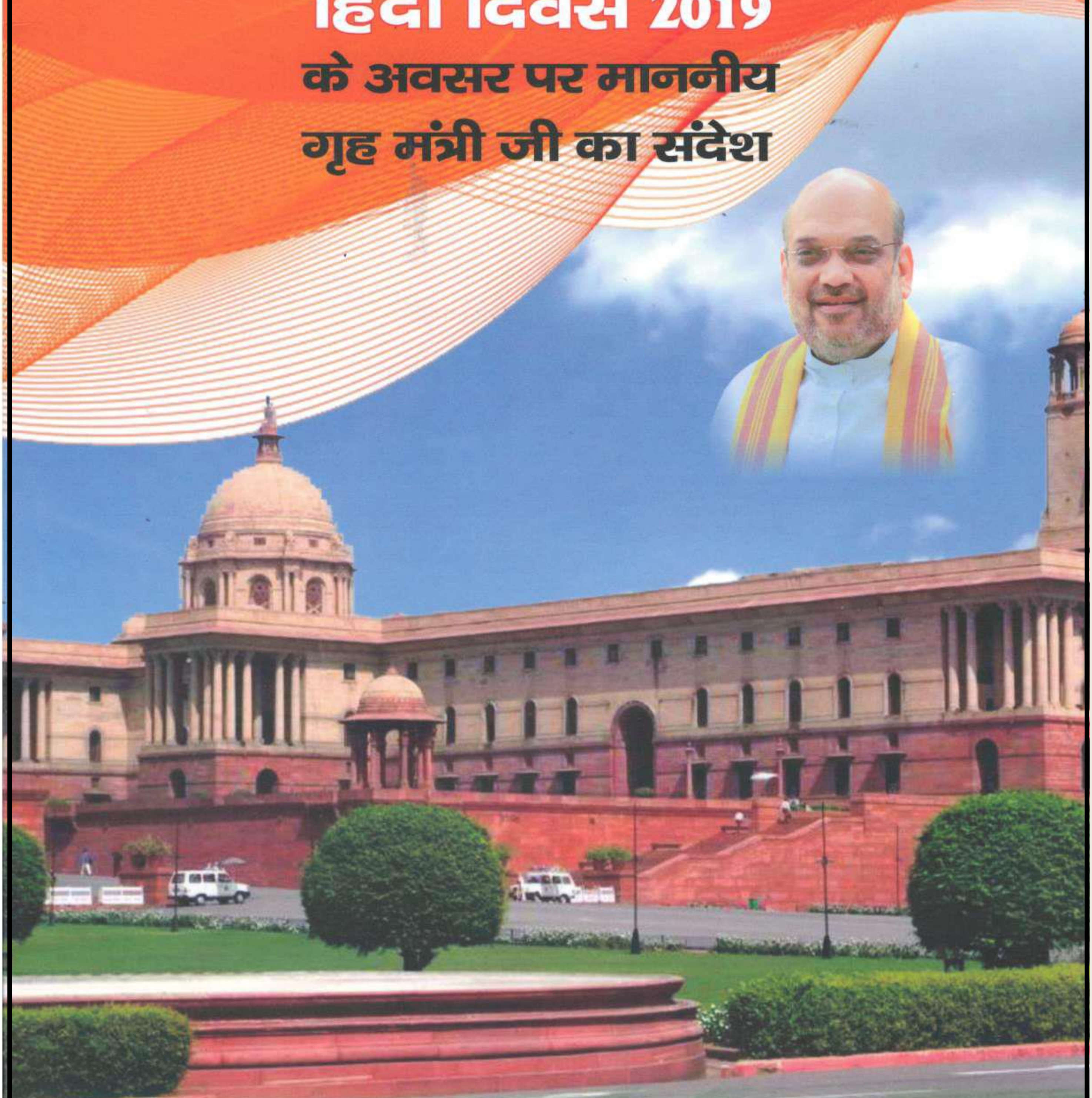

राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री
भारत
AMIT SHAH
HOME MINISTER
INDIA

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं !

हमारा देश विविध भाषाओं, बोलियों एवं संस्कृतियों का देश है। भारतीय सभ्यता, संस्कृति, साहित्य एवं दर्शन का गौरवपूर्ण इतिहास हिंदी भाषा में उपलब्ध है। हिंदी देश के सभी भाषा-भाषियों के मध्य भावों और विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है। हिंदी भाषा में संस्कृत और अन्य भारतीय भाषाओं तथा बोलियों के भाव जीवंत हैं। भारतीय सभ्यता की अविरल धारा प्रमुख रूप से हिंदी भाषा से ही जीवंत तथा सुरक्षित रह पाई है।

किसी भी लोकतांत्रिक देश में जनता और शासन के मध्य जन भाषा ही संपर्क भाषा के रूप में सार्थक भूमिका अदा कर सकती है। हिंदी भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी एक उन्नत, समृद्ध और वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी में उच्चारित होने वाली ध्वनियों को व्यक्त करना बड़ा सरल है। हिंदी में जो बोला जाता है वही लिखा जाता है। हिंदी की इन विशेषताओं एवं सर्वाधिक लोकप्रियता को ध्यान में रखते हुए ही भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया एवं संविधान में इस संबंध में समुचित प्रावधान किए गए।

अपनी भाषा में मौलिक लेखन और कामकाज से अभिव्यक्ति बहुत ही सहज और सरल होती है, जो अनुवाद की भाषा से संभव नहीं है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हिंदी को सरलतम रूप में अपनाकर राजकीय कामकाज में अधिक से अधिक इसका प्रयोग किया जाए। मैं भारत सरकार के सभी मंत्रालयों/विभागों/ कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों इत्यादि के कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों से अनुरोध करता हूँ कि वे अपने दैनिक और सरकारी कामकाज में मूल रूप से हिंदी का प्रयोग करें ताकि कार्यालय के अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों को भी अपना कार्य हिंदी में करने की प्रेरणा मिले।

उदारीकरण, भूमंडलीकरण और उपभोक्तावाद के इस युग में देश को आर्थिक रूप से शक्तिशाली बनाने तथा कौशल विकास को प्रोत्साहन देते हुए आम जनता को सूचना प्रौद्योगिकी, कृषि अभियांत्रिकी और स्वास्थ्य सेवाओं जैसे क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के माध्यम से शिक्षित करने की बहुत अधिक आवश्यकता है। इसी बात को ध्यान में रखते हुए राजभाषा विभाग ने सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से राजभाषा हिंदी का और अधिक प्रचार-प्रसार करने के लिए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **कंठस्थ** का निर्माण किया है। स्मृति आधारित इस अनुवाद कार्य प्रणाली की विशेषता यह है कि इसमें अनुवादक पूर्व में की गई अनुवाद सामग्री का पुनः प्रयोग कर सकता है जिससे समय की काफी बचत होती है। राजभाषा विभाग द्वारा जन-साधारण के लिए **लीला हिंदी प्रवाह मोबाइल ऐप** तैयार किया गया है जिसके माध्यम से 14 विभिन्न भाषा-भाषी अपनी अपनी मातृभाषाओं में निःशुल्क हिंदी सीख सकते है।

संघ की राजभाषा नीति का आधार सद्भावना, प्रेरणा और प्रोत्साहन है। संघ की राजभाषा होने के कारण हम सभी का यह संवैधानिक दायित्व है कि हम राजभाषा संबंधित अनुदेशों का अनुपालन उसी दृढ़ता और तत्परता के साथ करें, जिस प्रकार अन्य सरकारी अनुदेशों का अनुपालन करते हैं। हम स्वयं अधिक से अधिक कार्य हिंदी में करते हुए अन्य अधिकारियों/कर्मचारियों से भी राजभाषा अधिनियमों का अनुपालन सुनिश्चित कराएं ताकि आम आदमी सभी सरकारी योजनाओं व कार्यक्रमों का लाभ उठा सके।

आइए ! हिंदी दिवस के इस अवसर पर हम यह प्रतिज्ञा लें कि हम सब मिलकर राजभाषा हिंदी के माध्यम से स्वदेशी विज्ञान की समृद्ध परंपरा को जन-जन तक पहुंचाकर शिक्षित, शक्तिशाली एवं नए भारत का निर्माण करेंगे। मुझे पूर्ण विश्वास है कि हमारे सामूहिक एवं सार्थक प्रयासों से हिंदी न केवल राष्ट्रीय स्तर पर अपितु विश्व पटल पर ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण एवं समृद्ध भाषा के रूप में विश्व भाषा बनेगी।

हिंदी दिवस के शुभ अवसर पर आप सभी को मेरी ओर से पुनः हार्दिक शुभकामनाएं !

जय हिंद !

(अमित शाह)

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2019

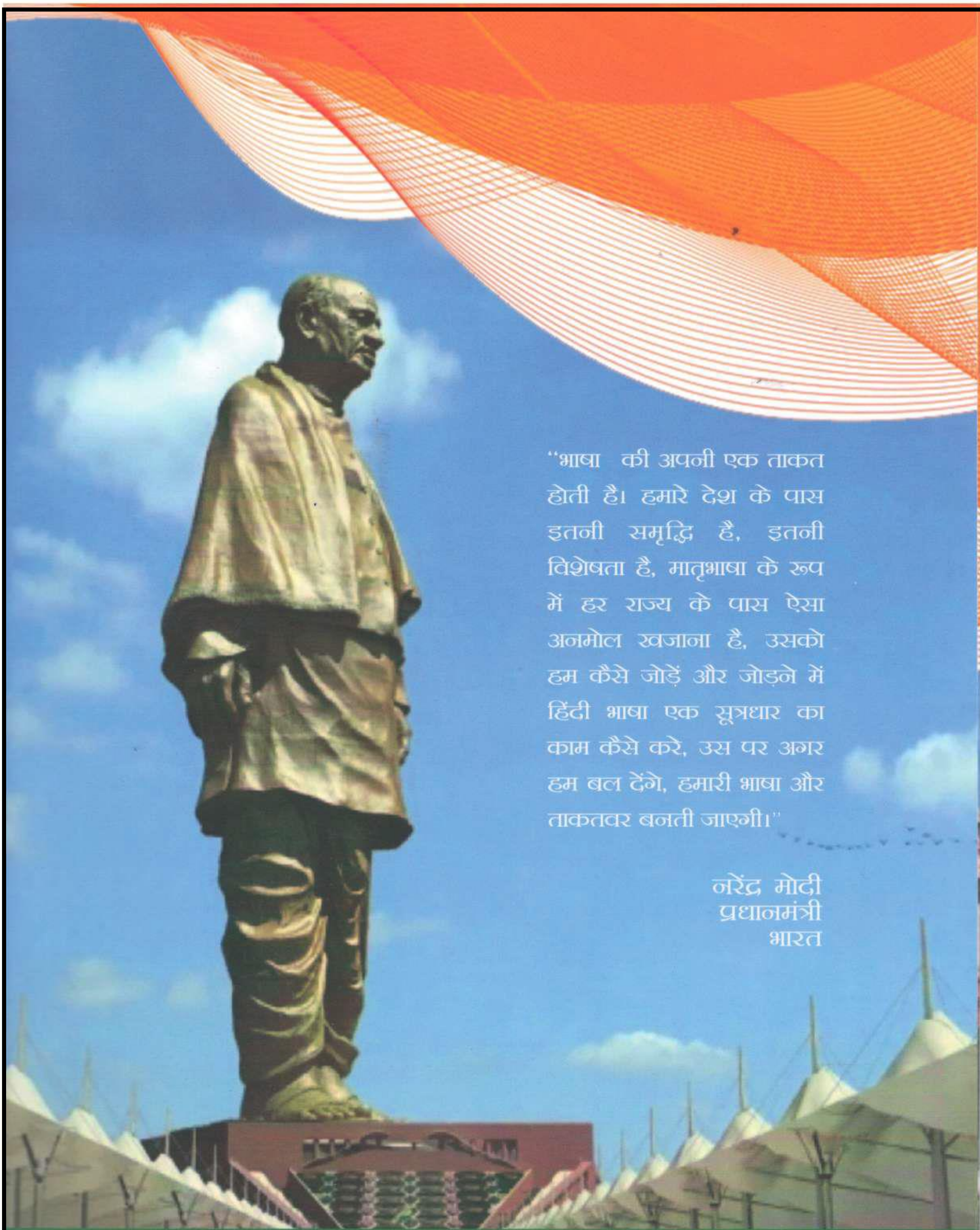

एकता की प्रतिमा (Statue of Unity)
(लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल)

संरक्षक की कलम से......

यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि प्रधान महालेखाकार (ले व ह), केरल के कार्यालय की हिंदी गृह पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक का ई-पत्रिका के रूप में प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी पत्रिकाओं का असीम योगदान रहा है। प्रत्येक कार्यालय से प्रकाशित होनेवाली हिंदी पत्रिका उस कार्यालय की रचनात्मक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों का आईना होती है। यह कार्यालयों में हिंदी के कार्यान्वयन को प्रतिबिंबित करती है और कार्मिकों को अपनी प्रतिभाओं की अभिव्यक्ति का अवसर प्रदान करती है।

हमारे कार्यालय के जिन कर्मचारियों/अधिकारियों ने अपनी सृजनात्मक प्रतिभा से इस पत्रिका को सफल बनाने में अपना योगदान दिया है, उन सबको मैं हार्दिक बधाई देती हूँ।

आशा है कि पत्रिका "श्रुति" राजभाषा हिंदी के प्रचार प्रसार के मार्ग पर अग्रणी रहे। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

सुधर्मिनीजी

तिरुवनंतपुरम

(जी सुधर्मिनी)
प्रधान महालेखाकार

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

मुख्य संपादक की कलम से.......

इस कार्यालय की हिंदी ई-पत्रिका "श्रुति" के 26वें अंक के प्रकाशन पर मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। कार्यालय में हिंदी के प्रचार प्रसार को बढावा देने में इस पत्रिका की अहम भूमिका रही है। हमारे कार्यालय के हिंदी एवं हिंदीतर भाषा-भाषी अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से ही पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। इस पत्रिका को सफल बनाने में योगदान करनेवाले हमारे अधिकारियों/कर्मचारियों को एवं पत्रिका के संपादक मंडल को मैं बधाई देता हूँ और पत्रिका के इस नवीनतम अंक की सफलता की कामना करता हूँ।

पत्रिका "श्रुति" के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

तिरुवनंतपुरम

(एन वी मात्तच्चन)
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

संपादक मंडल की ओर से ....

आदि धर्मग्रंथ मान्यताओं के अनुसार विद्या की देवी माँ सरस्वती ने अपनी वीणा से स्वरों की उत्पत्ति कर इस सृष्टि को भाषा रूपी अंलकार से अंलकृत किया था । उसके बाद मनुष्यों ने अपनी व्यावसायिक एवं दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु इसे अपने कर्म-काल के अनुसार एक विशेष राष्ट्र की भाषा की अभिव्यंजना दी । आज संपूर्ण विश्व में अनगिनत भाषाएं एवं बोलियां बोली जाती हैं, परंतु लक्ष्य केवल विचारों का संप्रेषण ही तो है । अब जिस भी भाषा का प्रयोग करें बात होनी चाहिए । यदि वक्ता और श्रोता का तालमेल हो रहा है तो भाषा प्रयोग सफल माना जाता है । भारत जैसे बहुभाषा-भाषी देश में इस प्रयोग को सफल बनाती है जनमानस की भाषा हिंदी । किसी कवि ने इसे यर्थाथ रूप प्रदान करने के लिए कहा भी है - हिंदी हैं हम वतन है हिंदुस्ता हमारा । इसी भावना से ओत-प्रोत हमारी गृह-पत्रिका “श्रुति” का 26वां अंक प्रबुद्ध पाठकों को समर्पित है ।

हिंदी भारतीय संस्कृति और सभ्यता की वाहिका है । भारत की राजभाषा के रूप में प्रतिष्ठित होने के पश्चात् हिंदी उत्तरोत्तर प्रगति प्राप्त कर रही है । शासन को जन साधारण से जोडने में हिंदी भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है । सरकार की योजनाओं का लाभ जन साधारण तक पहूंचाने में आम आदमी की भाषा हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है । हिंदी ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई है । भारत के आदरणीय प्रधान मंत्री महोदय द्वारा विदेशों में हिंदी में दिए गए भाषणों से विश्व में हिंदी की प्रतिष्ठा बढी है । आजकल इंटरनेट, मोबाइल और अन्य सामूहिक माध्यमें में भी हिंदी लोकप्रिय हो रही है ।

भारत सरकार के प्रयासों के फलस्वरूप सरकारी कार्यालयों में हिंदी का व्यापक प्रचार प्रसार हो रहा है । इसी दिशा में हमारे कार्यालय में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन के संबंध में किया जा रहा एक विनम्र प्रयास है इस पत्रिका का प्रकाशन । रचनाकारों के सहयोग एवं हमारे उच्च अधिकारियों के प्रोत्साहन एवं प्रेरणा के फलस्वरूप ही इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है । “श्रुति” के प्रकाशन से जुडे हुए सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हमारा हार्दिक धन्यवाद ।

सभी पाठक बंधुओं के समक्ष “श्रुति” का यह नवीनतम अंक सादर समर्पित है । “श्रुति” के माननीय पाठकगण हमेशा हमारे प्रेरणास्रोत रहे हैं । आपके बहुमूल्य सुझावों की हमें प्रतीक्षा रहेगी ।

जय हिंद ! जय हिंदी !

संपादक मंडल

Dedicated to Truth in Public Interest

दौरे समां

भारत भूषण
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

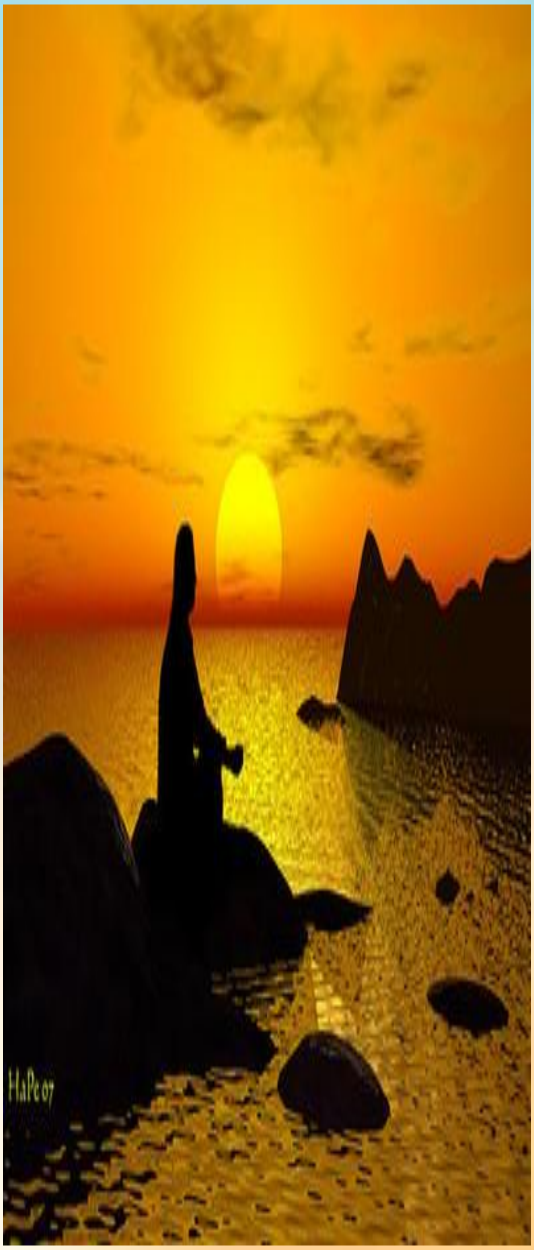

दोस्तों ये दौरे समां कैसा आ गया
किसी से भी किसी को राफता ना रहा
भाई ही भाई को पूछता नहीं
ज़माने के बाजार में हर शै बिक रही
कुछ लोग तो फक्त दूर हैं
कुछ हालाते दूशवारी मजबूर हैं
कहीं भीड़ ही भीड़ है
कहीं तड़पती जिंदगी पुरजोर है
कहीं कोई यादें गम पी रहा
कही कोई बैठ तन्हा रो रहा
कहीं कोई खुद में ही मशगूल है
कहीं कोई ढूंढता हालात माकूल है
मजलूम पर सितम्गर जिंदगी का सितम पहले ही कम ना था
हालात दुशवार करने को कोरोना भी आ गया
जो पहले से फांसले बना कर रहे
उन्हे तो हालात ये ओर भा गए
अब तो ये फांसला जायज हर जगह
कि जमुरियत ने भी ऐलान कर दिया
कि फांसला दो गज बनाओ जनाब
और हो सके तो डालो हिजाब
'भारत' सोचता है बैठा कभी-कभी
क्या मालिक दो जहां भी चाहता यही
या दौरे समां ये हर बशर के इम्तिहान का
कि कौन रहता मालिक की रजां में राजी हर जगह
और कौन ढूंढता नुक्स उसके फरमान में बेपनाह

विश्व में आतंकवाद का प्रभाव

के शांति
सहायक लेखा अधिकारी

मनुष्य एक सामूहिक प्राणी है। आपस में मिलजुल कर जीना, प्रेम और शांति फैलाना, एक दूसरे की मदद करना, सुख-दुख में साथ देना यही हम सब की कामना है, आग्रह है। लेकिन आजकल विश्व भर में जो अशांति फैली है, वो सिर्फ भारत में ही नहीं पूरे विश्व में चिंता और चर्चा का विषय है। खासतौर पर आतंकवाद से पूरा विश्व विनाश की ओर बढ़ रहा है।

आजकल आतंकवाद एक कीड़े की तरह पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। दुनिया के कई देशों में बम फटने से जवानों और लोगों की जान खतरे में हैं। कश्मीर का उदाहरण ही ले लो, वहां आतंकवाद इतना बढ़ गया है कि जीना मुश्किल हो गया है। भारत में ही नहीं, पूरे विश्व की सबसे सुंदर जगहों में कश्मीर गिनी जाती है। प्राकृतिक सौंदर्य से भरी कश्मीर में फूलों की खुशबू की जगह बम के धुओं की बू आती है। आतंकवाद फैलाने के लिए कम उम्र के नौजवानों को बम व आयुधों का प्रशिक्षण दिया जाता है। आतंकवादी संगठन जन विरोध व राष्ट्र विरोध का काम करते हैं। आतंकवाद के कारण विश्व के देशों के बीच आपसी सहयोग और विश्वास नष्ट हो रहा है। जो धन जनहित के कार्यों में लगाया जाना था अब उसे देश की रक्षा के लिए खर्च करना पड़ रहा है। हमारे पडोसी देशो में भी आतंकवाद इतना बढ़ चुका है कि रोज़ कहीं न कहीं बम के धमाके होते रहते हैं। इससे राष्ट्रों की आर्थिक स्थिति कमज़ोर हो जाती है। विश्व भर में शांति की चर्चा होती है, परंतु वह सिर्फ कागज़ पर ही रह जाती है। अमेरिका जैसे विकसित देशों में भी आतंकवाद अब धीरे- धीरे पैर फैला रहा है। इन सब का अंत करना है, कई सकारात्मक कार्रवाई हुई है लेकिन अभी यह एक छोटा सा कदम है। कई बार सरकार भी आतंकवादियों के दबाव में आ जाती है, यह आतंकवाद की जीत है, इसे बदलना होगा।

हमें प्रण लेना चाहिए कि इसे हर हाल में रोकना है और शांति कायम करनी है। यही हमारा लक्ष्य है। विश्व शांति अमर रहे।

(हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता हिंदीतर भाषा-भाषी कार्मिकों की श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त निबंध)

बचपन की यादें

के शांति
सहायक लेखा अधिकारी

सुबह सूरज की पहली किरणों के आगमन से राजू की आँखें खुल गई । धीरे- धीरे वह खिड़की की ओर बढ़ा, बाहर बर्फ ही बर्फ बिखरा पड़ा है, मानो एक सफ़ेद बिस्तर बिछा हुआ हो ।

आज ओणम है । राजू अब अमेरिका की एक बड़ी कंपनी में मैनेजर है और दस साल से वहीं है । उसकी पत्नी सुशीला और आठ साल की बेटी भी साथ है । कल शाम को जब राजू की माँ ने फोन किया तब जाकर उसे याद आया कि आज ओणम् है । उसकी यादें बचपन के मीठी पलों का स्मरण करते हुए बीस साल पीछे चली गईं ।

कितना उत्साह था, कितनी उमंग थी, कितना जोश था चारों ओर और त्योहार की भावना जाग रही थी । सुबह-सुबह जाकर फूल इकट्ठा करना , घर में और स्कूलों में फूलों से ‘अत्तपूकल्लम’ बनाना , फिर ओणम के खेल जैसे ‘पुलिकली’, ‘वटमवली’ आदि में भाग लेना । उसको याद था कि एक बार इन खेलों में भाग लेते वक्त उसे चोट भी आई थी । लेकिन चोट की परवाह न करके वह जोश से आगे बढ़ रहा था । सब लोग ओणम् के दिन खुश थे, सबके चेहरों पर मुस्कुराहट थी । रात-रात तक दोस्तों के साथ घूमना, ओणम के दस दिन पहले ही तैयारी करना, सारे भेद-भाव, जात-पात भुलाकर एक परिवार के सदस्य की तरह त्योहार मनाना । माँ के हाथों से बने स्वादिष्ट खाना खाने की याद से उसकी आँखों में आँसू आ गई । एक पल के लिए उसने मन ही मन अपनी माँ को याद की । वह घर में दोस्तों के साथ खूब शोर मचाते, नाचते-गाते, लेकिन माँ कुछ नहीं कहती । एक भरी मुस्कान के साथ अपने बेटे के साथ उसके दोस्तों को भी खाना परोसती । “काश! माँ आज मेरे साथ होती ।” राजू का मन कुछ पल के लिए बचपन की उन यादों के लिए तरस रहा था । ओणम के दिन नए-नए कपड़े पहनना और अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के घर जाना, खूब स्वादिष्ट भोजन करना, खेलना-घूमना, ये सारी यादें उसे अपनी बचपन की ओर ले गई ।

आज ओणम है, चारों ओर बर्फ की चादर ओढे धरती को देखकर राजू का मन उदास हो गया, अमरिका में ओणम के त्योहार का कोई एहसास ही नहीं हो रहा । चारों ओर ठंड ही ठंड ।

यादें फिर बचपन की ओर चल पड़ा । राजू को आज भी याद था, उसने एक बार स्कूल में ओणम के अवसर पर

महाबली का वेश धारण किया था और उसके सिर पर रखे मुकुट नाचते-नाचते नीचे गिर गया और सभी लोग हंसने लगे। यह सोचकर राजू के मुख पर मुस्कुराहट छा गई। फिर एक बार, अपने दोस्तों के साथ स्कूल में अत्तपूकल्ल्म प्रतियोगिता के लिए सामान, फूल आदी खरीदते-खरीदते राजू को देर हो गई और अंतिम बस भी छूट गई थी, कई मील पैदल चले, फिर एक ट्रकवाले ने सबको ट्रक में बिठाकर शहर के पास छोड़ दिया था। अगले दिन 'अत्तम' प्रतियोगिता थी। पूरी रात बिना सोए जागे-जागे रहने के बावजूद उनमें उत्साह में कोई कमी नहीं आई थी। वे सब प्रतियोगिता स्थल की ओर चल दिए। कितने सुनहरे पल थे, उन यादों में फिर से जीने की लालसा राजू के मन में जाग उठी।

बचपन, एक सुनहरा पल है। बचपन की यादें हमेशा मीठी होती है। राजू अपने बचपन की यादों को स्मरण करके बहुत खुश हो गया। वो दिन भी क्या दिन थे, उनका मिठास जीवन भर हमारे साथ रहता है। चाहे उम्र बीत जाए, चाहे चेहरे बदल जाएं, चाहे शहर या गाँव बदलकर रहना पडें, लेकिन यादें हमेशा हमारे लिए सुनहरी ही रहती हैं। उसमें बचपन की यादें, शायद ही कोई भुला पाए।

राजू, आज अमरिका में अपने परिवार यानी, अपनी पत्नी और बेटी के साथ, अपने बडे से घर में ओणम मना रहा है। घर में कोई रिश्तेदार नहीं, कोई शोर शराबा नहीं। बस शांति का माहौल है। घर के भीतर और घर के बाहर। राजू मन ही मन सोचता रह गया, "यहाँ तो ओणम आया और गया। पता भी नहीं चला कि ओणम जैसा एक बडा त्योहार कभी हमने मनाया भी था। काश, वह बचपन की यादें फिर से लौट आती।"

(हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित कथा रचना प्रतियोगिता हिंदीतर भाषा-भाषी कार्मिकों की श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त कहानी)

..... टिप्पणियाँ हिंदी में लिखिए .....

..... मसौदे हिंदी में तैयार कीजिए .....

..... शब्दों के लिए अटकिए नहीं .....

..... अशुद्धियों से घबराइए नहीं .....

..... अभ्यास अविलंब आरंभ कीजिए .....

खुल रहें है नींद के सीक्रेट्स

कविता सुरेश
वरिष्ठ लेखाकार

नींद का विज्ञान अपने आप में दिलचस्प है और नींद के सीक्रेटस् पिछले कुछ वर्षों से ही सामने आ रहे हैं। आज तक वैज्ञानिक ठीक-ठीक यह नहीं पता कर पाए हैं कि नींद में हमारा दिमाग किस तरह काम करता है, हमें सपने क्यों आते हैं और उन सपनों के क्या मायने हैं। इसके बावजूद नींद को लेकर कई दिलचस्प बातें पता चली हैं।

- **परिचित सुगंध**
  नींद के वक्त अगर आसपास परिचित सुगंध हो तो इस दौरान आपकी याददाश्त बेहतर होती है। आपमें कुछ सीखने की प्रवृत्ति बेहतर होती है।

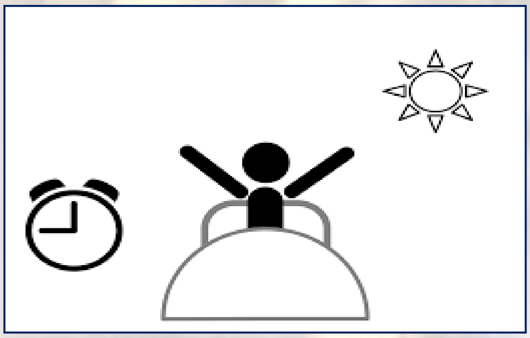

- **शरीर का कांपना**
  नींद के दौरान जिन लोगों का शरीर रह रहकर कांपता या झटके खाता है, यह आम बात है। इन्हें हिप्निक जर्क कहते हैं और इनका कोई नुकसान नहीं होता है।
- **झपकी लेने का समय**
  सोने के लिहाज से प्राकृतिक तौर पर झपकी लेने का समय दोपहर 2 से 4 बजे के बीच का होना चाहिए जिससे रचनात्मकता बढ़ती है। इस समय ली गई झपकी आपकी ऊर्जा को जल्द रिस्टोर करती है।
- **आठ घंटे की नींद ज़रूरी**
  प्राकृतिक रूप से केवल 5 प्रतिशत लोग ही कम नींद लेनेवाले में होते हैं। ज़्यादातर लोगों को रोजाना आठ घंटो की नींद की जरूरत होती है लेकिन हममें से 30 प्रतिशत लोगों को प्रति रात छह घंटे से कम नींद मिलती है।
- **कम नींद का हल**
  सैन्य अनुसंधानों के मुताबिक अगर आप पहले से ही कुछ ज्यादा देर तक सो लें, तो बाद में कम नींद का आप पर ज्यादा असर नहीं होगा। छह घंटे से कम नींद, नशे जैसी हालत अगर आप लगातार 12 रातों तक छह घंटे से कम नींद लेते रहे हैं, तो आपकी चुस्ती व चेतन वैसी ही होंगी जैसे कि आपके रक्त में 0.1 प्रतिशत अल्कोहल के बाद होगी। आपका संतुलन बिगड़ा हुआ और याददाश्त भी तेज नहीं होगी। दूसरे शब्दों में कहें तो आप नशे में होगें।

विश्व में आतंकवाद का प्रभाव

रोज़ अली
डेटा एंट्री ऑपरेटर

आंतक से आशय किसी समुदाय या व्यक्ति विशेष द्वारा किए गए ऐसे कार्य से है जिससे अन्य व्यक्ति या समुदाय में भय की भावना घर कर जाए । भारतवर्ष में आंतक की कहानी को देखा जाए तो यह विभिन्न रूपों में दिखाई देती पड़ती है । ऐसी नहीं कि सिर्फ भारत ही, विश्व के कई देश या सभी देश कभी न कभी इस आंतक या भय की भावना से गुजर चुके हैं ।

आधुनिक काल से ही जब विभिन्न देशों को अपना उपनिवेश बनाया और उन पर शासन किया तो वह भी एक आतंक का ही रूप था क्योंकि किसानों से लगान वसूली के नाम पर उनका शोषण किया जाता रहा है और बाद में

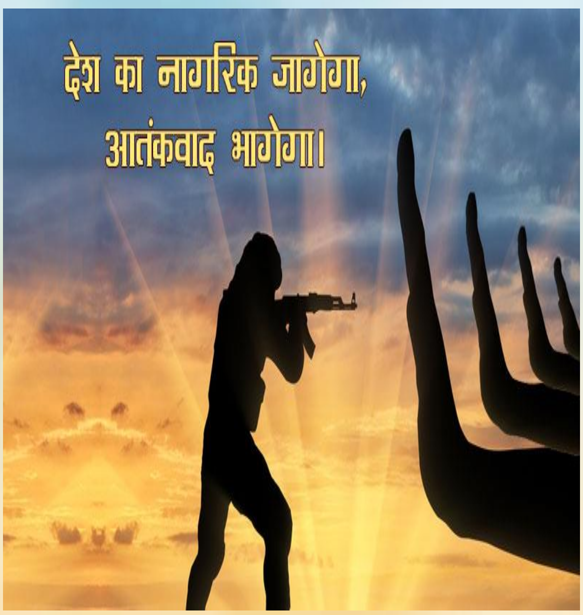

आधुनिकता आते आते यह एक भयावह स्थिति में तब्दील हो गया ।

आतंकवाद से होने वाले कुछ प्रभावों की चर्चा इस प्रकार है-

जन धन की हानि : द्वितीय विश्वयुद्ध के बाद हिरोशिमा और नागासाकी पर हुए परमाणु हमलों की भयावह स्थिति को आज भी लोग अपने दिलों में बसाए हुए हैं । एक देश के द्वारा दूसरे देश पर इस तरह से आतंक फैलाने से न जाने कितने ही मासूम बच्चों, औरतों, मनुष्यों यहाँ तक कि जानवरों और अर्थव्यव्स्था को नुकसान हुआ । भारत के संदर्भ में बात करें तो हाल के ही उदाहरण से हम यह समझ सकते हैं कि आतंकवाद एक ऐसी बुराई है जिसको दूर करना अति आवश्यक है । उरी हमला, पुलवामा हमला, मुंबई हमला, 26/11 हमला, ऐसे न जाने कितने ही हमले हुए जिसमें हमारे देश की वास्तविक संपदा अर्थात् हमारे जांबाज सिपाही शहीद हो गए ।

अर्थव्यस्वस्था को क्षति : जब भी कोई देश किसी अन्य देश पर हमला या आतंक फैलाता है तो वह शायद यह सोचकर आतंक फैलाता है कि जन धन की हानि हो सके । पर उस हमले के कई अन्य प्रभाव भी देखने को मिलते हैं जैसे कि संस्थागत ढांचे का विनाश, अर्थव्यव्स्था में गतिरोध व मंहगाई इत्यादि ।

जापान पर हुए परमाणु हमले से तो वहाँ की अर्थव्यवस्थता पूरी तरह से नष्ट हो गई। भारत में होने वाले मुंबई हमले, संसद हमले से भी अर्थव्यवस्था को नुकसान हुआ जिससे उभर पाने में कई दशक लग गए।

एक बार हमला हो जाने से धन की भी खपत होती है जो बाद में अन्य देशों के ऋण के सहारे ही पूरी होती है जिससे देश ऋण तले दब जाता है।

पर्यावरणीय क्षति : अभी हाल का उदाहरण है कि पाकिस्तान सरकार ने भारत के खिलाफ धारा 370 हटने के बाद न्यूक्लियर वार छेड़ने की बात कही। अगर यह युद्ध होता है तो न सिर्फ जन धन की हानि होगी बल्कि पर्यावरण को काफी नुक्सान होगा, क्योंकि न्यूक्लियर वार से जीव-जंतु भी खत्म होंगे। खाद्य श्रृंखला के जीव भी मरेंगे और यदि खाद्य श्रृंखला में एक बार असंगति हुई तो यह किसी भी देश की मानव सभ्यता के लिए लाभदायक नही हो सकती। आंतकी हमलों से विशेषत: न्यूक्लियर वार से ऐसी हानिकारक किरणें उत्सर्जित होगी जिससे विभिन्न प्रकार के रोगों का प्रसार होगा।

सहयोगवाद और परस्पर भाईचारे की भावना का ह्रास : इस आतंकवाद के विभिन्न प्रभावों की चर्चा के बाद हम यह पाते हैं कि आतंकवाद वर्तमान में एक सामाजिक बुराई का रूप धारण कर चुका है जिससे जान माल की क्षति, अर्थव्यवस्था को क्षति, पर्यावरण को क्षति होती है। लेकिन उसका एक सामाजिक प्रभाव देखें तो लोगों में नफरत की भावना घर कर जाती है जिससे कि बाद में दो देश आपस में रिश्तों को सुधारना चाहें भी तो वह मुश्किल ही लगता है।

अत: ऐसे में देशों को चाहिए कि आपसी रिश्तों को बनाए रखें और अपने देश की प्रगति पर ज्यादा से ज्यादा ध्यान दें। विश्व के कई देशों ने ऐसी संधियाँ स्थापित की हैं जिससे कि आंतक के प्रभाव को कम किया जा सकें। भारत ने भी यूनेस्को में आतंकवाद को परिभाषित करने वाले कानून का मसौदा पेश किया है।

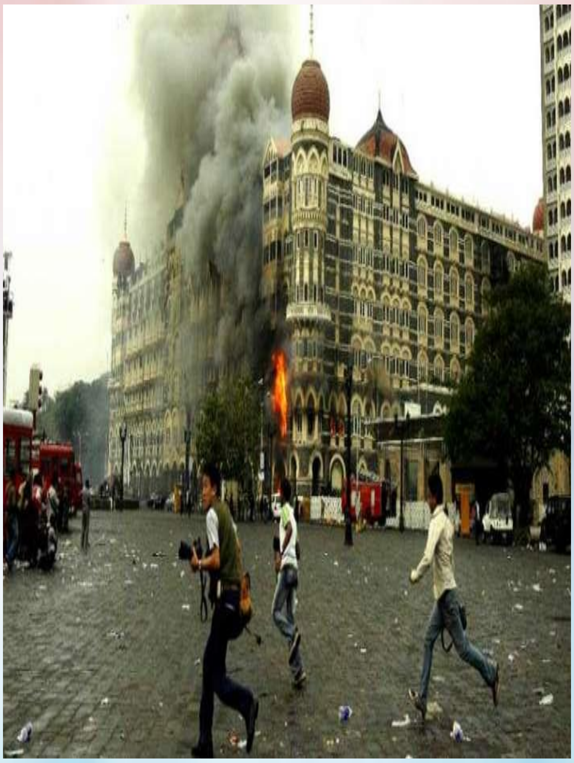

यह विश्व हमारी धरोहर है और हर प्राणी का अपना प्राकृतिक अधिकार है, इसलिए विश्व के विकसित देश हो या विकासशील देश उन्हें हर उस कदम से बचना चाहिए जिससे कि इस धरोहर को क्षति पहुँचे।

(हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित निबंध लेखन प्रतियोगिता हिंदी भाषा-भाषी कार्मिकों की श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त निबंध)

हमें भारतीय होने पर गर्व होना चाहिए। क्यों?

कविता सुरेश
वरिष्ठ लेखाकार

हमारे देश की सिंधुघाटी सभ्यता विश्व की उन प्राचीनतम सभ्यताओं में से एक है जिसे शहरी सभ्यता का नाम दिया जाता है। संसार की अधिकांश सभ्यताएं किसी जमाने में फली फूली और समाप्त हो गई किन्तु भारत के लिए गौरव की बात है कि भारतीय सभ्यता सतत् जीवंत रही। बीसवीं शताब्दी में भी भारत अपने गौरवपूर्ण अतीत को विस्मृत नही कर पाया।

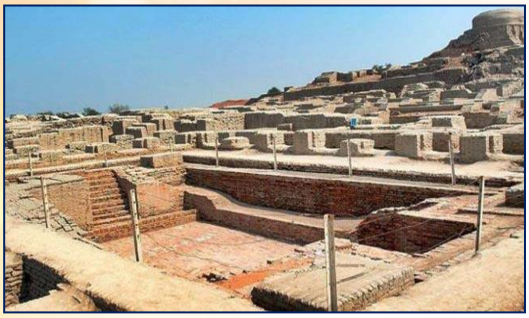

सारा संसार हमारे हृदय की विशालता, दृष्टिकोण की व्यापकता और त्याग भावना से परिचित है, हम इतने लंबे-चौड़े विशाल भूखंड के बेताज बादशाह हैं। भारतीय संसार के उन थोड़े से लोगों में से एक हैं जो "स्वयं जीवित रहो और दूसरों को भी जीवित रहने दो" की बात जानते हैं।

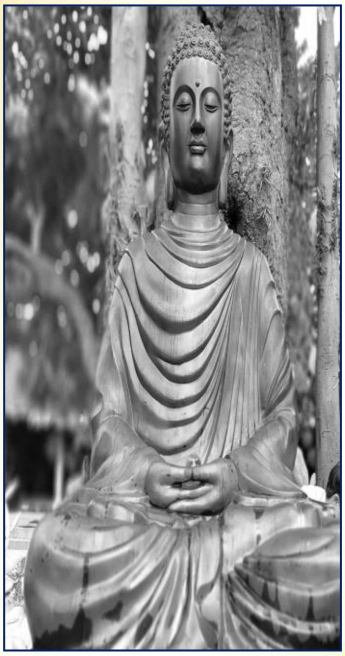

हमारे संत और गुरु जैसे भगवान बुद्ध, गुरु नानकदेव आदि एक व्यक्ति नहीं बल्कि एक परंपरा थे। भारतीयों का एक महान गुण उनकी सहनशीलता है। भारतीयों ने बाहर से आने वालों का, यहाँ तक कि उन लोगों का भी स्वागत किया है जो बुरी नीयत से भारत में आए। भारत एक महान राष्ट्र है। इसमें संसार के बड़े छोटे सभी धर्मों के मानने वाले लोग सद्भाव से रहते हैं। हम सब भारत माता के प्यारे सपूत हैं। जब तक एक भी भारतीय की शिराओं में रक्त का संचार होता रहेगा, प्रत्येक भारतीय देश के लिए प्राणों का बलिदान करने को तैयार रहेगा।

भारतीय के हृदय में अपार प्यार है। भारतीय अपने देश की नदियों को भी माँ कहते हैं। प्यार का इतना अतिरेक है कि भारतीय पत्थरों तक की पूजा-उपासना करते हैं। हमारे देश की नदियाँ, पर्वत, मैदान, वन और मरुस्थल सभी सुंदर हैं। आगरे का ताजमहल सौंदर्य में अद्वितीय है। कुतुबमीनार संसार में अपनी शैली की सबसे उत्कृष्ट मीनार है।

भारत देवों की धरती है। देवप्रिय भारत भूमि का आकर्षण अद्वितीय है। इसी भूमि पर वेदों का प्रणयन हुआ। वेद संसार के प्राचीनतम व श्रेष्ठतम ज्ञानकोष हैं। इस पुण्य भूमि पर भगवान कृष्ण ने गीता का संदेश दिया, कर्म का संदेश दिया। मोहभंग करके धर्म में आस्था जगाने वाला ऐसा दिव्य ग्रन्थ अन्यत्र दुर्लभ है।

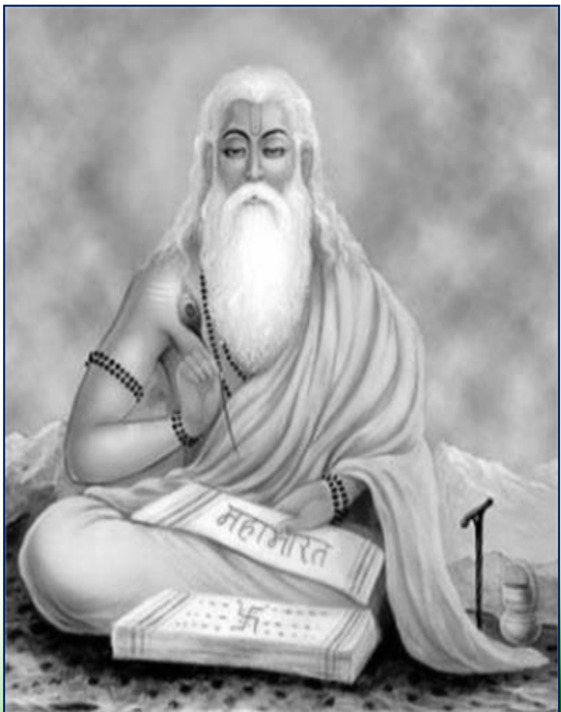

इंद्रधनुष

रजनीकांत सिंहा
सहायक लेखा अधिकारी

प्रकृति की कृति, निराली ये संयोजन है,
रंग रोगन का करतब मतवाली ।
बाण छूटा है इंद्र के हाथों,
लगता है इंद्रधनुष का प्रयोजन है ।

रंग रंगीली ये धनु धरा पे,
अंबर का श्रृंगार है ।
धरती गगन का मिलन सेतु ये,
लगता ईश्वर का चमत्कार है ।

कैसे आया कौन लाया तुम्हें,
चंद लम्हों में ही मन हर्षाया है ।
कृति ये कैसी प्रकृति की,
सात रंगो को एक साथ दर्शाया है ।

मेघ, वर्षा, धूप का मिलना,
मिलना प्रकाश तरंगों का ।
सब मिलकर इंद्रधनुष का बनना,
और खिलना मन के उमंगों का ।

अब कहाँ मेघ है, कहाँ है वर्षा,
कहाँ है वो बारिश वाली धूप ।
पेड़ कटाई, वनों की छटाई,
अरे बिगाड़ कर रख दिया धरती का रूप ।

इंद्रधनुष तो माँ प्रकृति की,
सबसे मोहक आभूषण है ।
कैसे कोई नया इंद्रधनुष बनेगा,
व्यापक चारों ओर प्रदूषण है ।

पहले इसका कोई उपचार करो,
फिर मंथन इस पर सौ बार करो ।
धरती को धरती ना समझो,
इसे माँ समझकर प्यार करो ।

फिर कोई नया इंद्रधनुष आएगा,
मन फिर से वैसे ही हर्षाएगा ।
हर रंग प्रकृति दे देगी उसको,
बाकी रंग अपने आप आ जाएगा ।

(हिंदी पखवाड़ा समारोह के दौरान आयोजित कविता रचना प्रतियोगिता हिंदी भाषा-भाषी कार्मिकों की श्रेणी में पुरस्कार प्राप्त कविता)

मेरे जीवन की शिक्षाएँ एवं अनुभव

त्रिलोक
लेखाकार

जिंदगी में पहली बार जब किसी समस्या से सामना हुआ तो भगवान के सामने जाकर खड़ा हो गया और उनसे उस समस्या को हल करने के लिए निवेदन किया। इसी प्रकार समस्यांए आती गई और मैं हल को तलाशने की जगह भगवान से प्रार्थना करता गया । फिर मुझे एहसास हुआ कि "समस्या ही जिंदगी है, जिंदगी समस्या नही है अर्थात समस्या है तो जिंदगी है, नहीं है तो एक मृत व्यक्ति और एक जीवित व्यक्ति में कोई भेद नही है।" समस्याएं आती गई और मैं जीवन के नए आयाम खोजता चला गया। फिर एक दिन जून 2013 में मेरे जीवन में एक घटना घटी उससे मुझे पता चला कि "हमें कोई भी गलती न करते हुए अपने जीवन को व्यतीत करना चाहिए।" इसी प्रकार जीवन चलता रहा , फिर मुझे एक कहावत का पता चला कि "सौ सुनार की और एक लौहार की"। जब मैंने इस पर शोध करना आरंभ किया तब मुझे पता चला कि जीवन में जब समस्याएं आप पर आती है तो आप उन्हें किस प्रकार देखते हो। जैसे "सौ सुनार की" मतलब जो मैनें समझा - वह है जिस प्रकार एक बच्चे में उसकी योग्यताओं का विकास करने के लिए विद्यालयों में कक्षाओं को बनाया गया है और उससे उसे उसी रूप में ढलने के लिए प्रेरित करता है जिस प्रकार एक सुनार सोने की धातु को उसका आकार देता है और "एक लौहार की" – इसका अर्थ मैंने इस प्रकार समझा है कि विद्यालयों में न जाकर जिस व्यक्ति को ज्ञान नहीं होता उसे बाद में कितनी भी पढ़ाई करा लो वो अपना आकार नही बदलता। इस अर्थ में अपवाद भी हो सकता है।

फिर एक दिन दिल्ली से अपने घर आते समय मेरी एक बाईक के साथ दुर्घटना हो गई। तब मुझे मेरे एक मित्र ने बताया कि जीवन में अपनी गलतियों की तरफ ध्यान देना ठीक है मगर हमें दूसरों की तरफ भी ध्यान देना चाहिए कि वे हमें क्षति तो नहीं पहुँचा रहे हैं। इस शिक्षा को मैंने अपने जीवन की हर पहलू पर अपनाया। जब कोई मुझे मेरे विचारों से दूर करने की कोशिश करता है तो मैं इस शिक्षा पर ध्यान देता। जैसे मेरा एक बार साक्षात्कार का बुलावा आया, तब मैंने मेरे कई मित्रों को बताया । उनमें से एक ने मुझे मेरे सामने ही बोला कि मेरा साक्षात्कार नही होगा। वहीं मेरे दूसरे मित्र ने यह न बताते हुए मेरा साथ दिया और

मुझे प्रेरित भी किया हालांकि उसे भी पता था कि मेरा साक्षात्कार नही होगा । फिर मेरे जीवन में एक ऐसी घटना हुई जिसका कोई प्रमाण नही था। परिवारजनों, मित्रों, चिकित्सकों, मनोचिकित्सक आदि से घंटो-घंटो परामर्श किया मगर कोई हल नही मिला। मेरे जीवन की सभी शिक्षाएं किसी काम न आ पाई । मेरे सारे अनुभव निरर्थक हो गए थे। जीवन की ऐसी समस्या का सामना बड़ी मुश्किल से हो पा रहा था। मार्गदर्शन की कमी का भी अनुभव हो रहा था। लग रहा था कि सारे अनुभव या शिक्षाएं किसी काम की नहीं हैं। किसी भी चीज में मन नही लग रहा था। तब मुझे मेरे जीवन से एक और शिक्षा मिली । वह यह है कि प्रकृति से सीखते रहो । कितनी भी बड़ी समस्या आए अपने अनुभवों और शिक्षा के साथ खड़े रहो और अपना सब कुछ भगवान और समय दोनों पर छोड़ दो । जब मैंने इस शिक्षा को अपनाया तब मुझे पता चला कि अपने मूल्यों का महत्व क्या होता है। मैं आप सभी का धन्यवाद करता हूँ कि आपने अपना कीमती समय निकाल कर मेरे अनुभव एवं शिक्षाओं को पढ़ा।

"हिंदी द्वारा सारे भारत को एकसूत्र में पिरोया जा सकता है।" *महर्षि दयानंद सरस्वति*
"मैं दुनिया की सब भाषाओं की इज़्ज़त करता हूँ, परंतु मेरे देश में हिंदी की इज़्ज़त न हो, यह मैं सह नहीं सकता।" *आचार्य बिनाबा भावे*
"चूंकि भारतीय एक होकर एक समन्वित संस्कृति का विकास करना चाहते हैं, इसलिए सभी भारतीयों का यह परम कर्तव्य हो जाता है कि वे हिंदी को अपनी भाषा समझकर अपनाएं।" *डॉ बाबा साहब अंबेडकर*

न्यूटन

भारत भूषण
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

एक दिन एक पेड़ की छांव में
बैठा हुआ था न्यूटन आराम से
इतने में बादे सबा का एक झौंका चला
सेब एक पेड़ से टूटकर गिरा
ये गनीमत थी सेब सर पर ना लगा
सेब को उठाकर उसने देखा गौर से
सोचने लगा फिर जोर-शोर से
कि माजरा है क्या इस गिरने के खेल में
ये सेब क्यों सीधा नीचे गिरा
क्या बात है इधर उधर ना जा पड़ा
कौतुहल उसमें एक पैदा हुआ
कई चीजें गिरा बारी-बारी परीक्षण किया
मामला फक्त वहीं फसता रहा
वो परेशान था फिर भी हसता रहा
खुदाया ऐसा भी क्या जादू यहां
शै जो फलक से गिरे जमीं थाम ले
शदीद कोशिशें भी कोई बात ना बनी
थक हार कर खुदा का नूर जानकर
कायनात के खेल में कुछ नायाब है
इस फेर में, कुछ तो है जो खीचता हर
शै को अपनी ओर , नाम सूझता नही
उपाय बूझता नही,फिर उस मालिक दो
जहां की शान में,नाम दिया गुरुत्व बल उसने आन से
वहीं से सिलसिला चला, न्यूटन मशहूर हो गया

वह कौन था

भारत भूषण
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

करीब दो महीने पहले की बात है बहुत ही मार्मिक पंक्तियां लिखकर किसी ने आभासी दुनिया (फेसबुक) के माध्यम से मुझसे संपर्क करने की कोशिश की, पंक्तियां लिख रहा हूँ ताकि आप उसमें निहित हृदय स्पर्शी मार्मिक भाव की अनुभूति प्राप्त कर सकें।

"यारा कदी ते फोन कर तेरी बड़ी याद ओंदी ए"

ये शब्द नहीं थे, ये कुछ अलग ही था जो मुझ में भी कौतुहल पैदा कर रहा था उस अंजान व्यक्ति के प्रति जो इतनी आत्मीयता से मुझसे संपर्क साधना चाह रहा था। पर एक समस्या भारी थी कि उस नाम के किसी व्यक्ति को मैं नही जानता था और जिन्हें जानता था उनमें वो नहीं था। आखिर दो दिन बाद काफी सोच विचार करने के बाद मैंने उसके द्वारा फेसबुक पर दिए गए नम्बर पर कॉल किया। उधर से जो आवाज आई वो बिल्कुल अजनबी जान पड़ी परन्तु एक-एक बोला जा रहा शब्द मेरे दिल तक जा रहा था। वो अपने तर्क देकर मुझे अतीत में धकेलने लगा। पहले लगा कि उसने मुझे कोई ओर व्यक्ति जानकर संपर्क किया है परन्तु फिर उसने जो अतीत की गहराईयों में मुझे धकेला तो उन अमित यादों की किताबों के पन्ने एक के बाद एक खुलने लगे। जो उसने बात की वह कोई एक दो या तीन साल पुरानी बात नहीं थी वो तो छब्बीस साल पहले की बात थी। वह मेरे प्रथम विद्यालय का मेरा एक सहपाठी निकला। हमने उस समय मिलकर कुछ शरारत की थी जिसकी चुभन मेरे मन में तो थी ही, मेरा मित्र भी अपने को बैचेन महसूस कर रहा था क्योंकि उस घटना के बाद मैंने उससे नाराज होकर उससे बात करनी छोड़ दी थी। वो मुझसे मिलने और शायद मुझसे माफी मांगने मेरे घर भी आया था। लेकिन मेरे मन में उसके प्रति मित्र भाव समाप्त हो चुका था इसलिए मैंने उसे एक अंजान आगंतुक की भांति व्यवहार कर घर के अंदर नहीं आने दिया और उसे वापिस लौटने को कहा। ये मेरे दरवाजे से लौटने और कहीं ना कहीं उस गलती की टीस, जो अंजाने में हुई थी, उसके मन में भी थी। मैं तो उसे और घटना को अतीत में भुला चुका था। परन्तु आज फिर उसने उस घटना के लिए क्षमा मांगी। उसकी सभी बातें सही प्रतीत हो रही थी परन्तु उसका नाम वह नहीं था

जिसे मै जानता था । संशय गहरा था और उससे भी गहरा सवाल कि उसे कैसे पता । फिर उसने मेरी कल्पना से परे का एक तर्क दिया कि उसका पहला नाम जिससे मैं उसे जानता था उसने बदल लिया है और अब उसका नया नाम वही है जिससे वह अब फेसबुक पर है । इतना सब कहने के बाद एक बार फिर उसने कहा कि लगता है मैने उसे अभी भी माफ नही किया है । अब मै उसकी बातों के वशीभूत हो उसे वास्तव में माफ कर चुका था । अब हम यदा कदा मुझे कहता है काश! हम फिर उसी समय में वापिस जा पाते और उस शाश्वत सुख की प्रतिपूर्ति कर पाते जो उस समय एक कागज की कश्ती से मिलता था और अब एक आरामदायक बीएमडब्ल्यू में नही मिल रहा । आज वह काफी संपन्न हो गया । सही मायने में वह मन से भी संपन्न हो गया है कि आज उम्र के इस पड़ाव में भी उसके अंदर का बालक मेरे विद्यालय के प्रांगण में बेफिकर घूमता मिलता है निस्संदेह मेरे संग ।

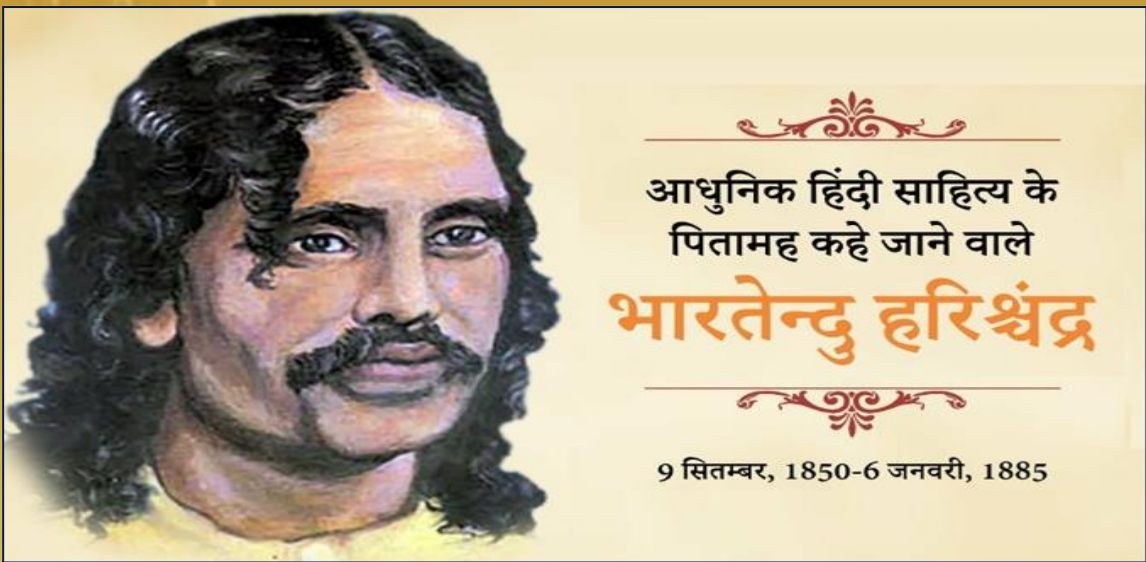

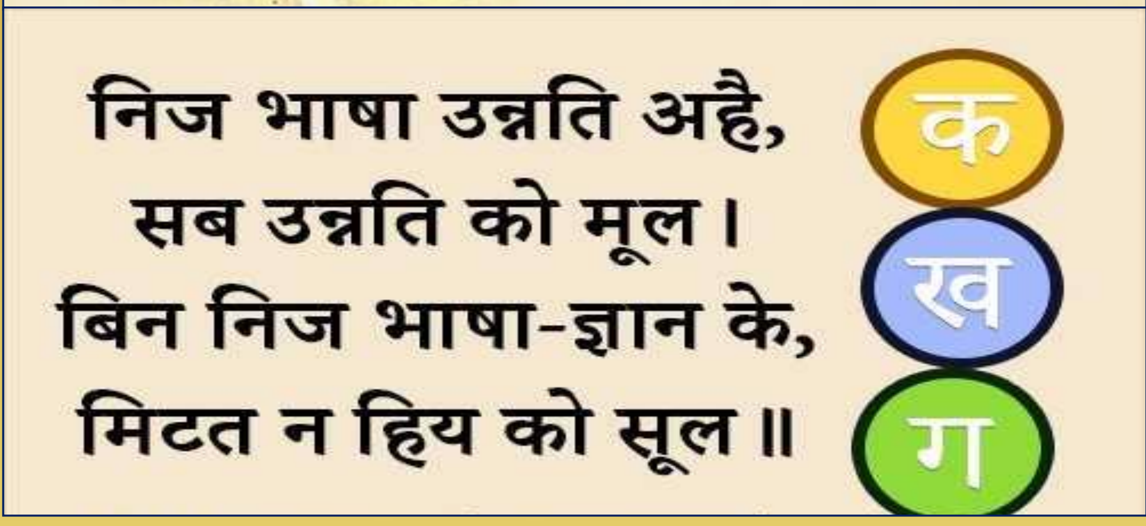

वाक्यांश और अभिव्यक्तियाँ

A	
Administrative approval may be obtained	प्रशासनिक अनुमोदन प्राप्त किया जाए
As a matter of fact	वस्तुतः
As a result of	के फलस्वरूप
As amended	यथा संशोधित
Action as discussed	चर्चा के अनुसार कार्रवाई करें
A brief note is placed below	संक्षिप्त टिप्पणी नीचे रखी जाती है
Attention is invited to	की ओर ध्यान आकर्षित किया जाता है
Action may be taken as proposed	प्रस्ताव के अनुसार कार्रवाई की जाए
Arrangement may be made	व्यवस्था की जाए
As proposed	यथा प्रस्तावित
As per details given below	नीचे दिए ब्यौरों के अनुसार/अनुरूप
As regards	के संबंध में/के विषय में/के बारे में
As soon as possible	यथाशीघ्र
According to/in accordance with	के अनुसार
Await reply	उत्तर की प्रतीक्षा करें
B	
By authority of	के प्राधिकार से
Bring into notice	ध्यान में लेना
Brought forward	आगे लाया गया
Before issue	जारी करने से पहले
By return of post	लौटती / वापसी डाक से
By virtue of	के नाते, की हैसियत से
C	
Circulate and then file	परिचालित करके फाइल किया जाए
Copy enclosed for ready reference	सुलभ संदर्भ के लिए प्रतिलिपि संलग्न
Copy forwarded for information and necessary action	सूचना एवं आवश्यक कार्रवाई के लिए प्रतिलिपि अग्रेषित
Come into force	लागू होना
Confirm, please	कृपया पुष्टि करें
Certified that	प्रमाणित किया जाता है कि
Connection with, in	के संबंध में
Consolidated report may be furnished	समेकित रिपोर्ट प्रस्तुत की जाए
Consultation with, in	से परामर्श करके
D	
Draft as amended is put up	संशोधित प्रारूप / मसौदा प्रस्तुत है
Duly complied	विधिवत् अनुपालन किया गया
Do the needful	आवश्यक कार्रवाई करें
E	
Explanation may be called for	स्पष्टीकरण मांगा जाए
Early orders are solicited	शीघ्र आदेश प्रार्थित है
Enclosure to the letter	पत्र का अनुलग्नक / संलग्नक
Exigencies of administrative work	प्रशासनिक कार्य की तात्कालिक आवश्यकताएं
Expedite action	शीघ्र कार्रवाई करें

F	
Follow up action	अनुवर्ती कार्रवाई
For approval/information/orders/perusal	अनुमोदन/सूचना/आदेश/अवलोकन के लिए
For favourable action	अनुकूल कार्रवाई के लिए
For record/signature/verification	रिकॉर्ड/हस्ताक्षर/सत्यापन के लिए
Forwarded and recommended	अग्रेषित और संस्तुत
Further communication/orders will follow	आगे फिर लेखा जाएगा/आगे और आदेश भेजे जाएंगे
G	
Give top priority to this work	इस काम को परम अग्रता दें
Give details	विवरण प्रस्तुत करें / ब्यौरे दें
Governed by the rules	नियमों द्वारा शासित
Grant of special pay	विशेष वेतन की स्वीकृति
H	
Half yearly return	अर्ध वार्षिक विवरणी
Hard and fast rule	पक्का नियम
Has been dealt with suitably	समुचित कार्रवाई की गई है
Having regard to	ध्यान में रखते हुए
Hold in abeyance	प्रास्थगित रखना
I	
I am directed to state that	मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि
In accordance with	के अनुसार
In public interest	लोकहित में
Immediate action	अविलंब / तत्काल कार्रवाई
In abeyance, held	आस्थगित / निलंबित, रोक रखा गया
In anticipation of	की प्रतीक्षा में / की प्रत्याशा में
In compliance with	का पालन करते हुए / के अनुपालन में
In due course	यथासमय / यथाविधि
In exercise of	के प्रयोग में / का प्रयोग करते हुए
I agree	मैं सहमत हूँ
Issue today	आज ही जारी कीजिए / आज ही भेजिए
In lieu of	के स्थान पर / के बदले में / की जगह
In modification	के संशोधन में / के आशोधन में
Initiate action, to	कार्रवाई प्रारंभ करना
Inter alia	अन्य बातों के साथ-साथ
Inter se	परस्पर / आपस में
In the prescribed manner	विहित रीति से, निर्धारित ढंग से
In this behalf	इस संबंध में, इस विषय में, इसके लिए
Inviting your attention to	की ओर आपका ध्यान आकर्षित करते हुए
Irrespective of	का विचार / लिहाज़ किए बिना
It is requested	यह निवेदन है, निवेदन है
It is suggested	यह सुझाव दिया जाता है, सुझाव है
K	
Keep in abeyance	स्थगित किया जाए / रोक रखा जाए
Keeping in view	को ध्यान में रखते हुए
Kindly acknowledge receipt	कृपया पावती भेजें
L	
Last pay certificate	अंतिम वेतन प्रमाण-पत्र

Leave application	छुट्टी की अर्जी, छुट्टी आवेदन
Leave not due	अदेय / अर्जनशोध्य छुट्टी
Leave on medical ground	चिकित्सा छुट्टी, बीमारी की छुट्टी
Leave preparatory to retirement	सेवानिवृत्ति पूर्व छुट्टी
Leave travel concession	छुट्टी यात्रा रियायत
Letter of acknowledgement	पावती
Letter of credence	प्रत्यय-पत्र
Letter of credit	साख-पत्र
Liable to disciplinary action	अनुशासनिक कार्रवाई की जा सकती है
M	
Matter is under consideration	विषय / मामला विचाराधीन है
Maximum admissible pension	अधिकतम अनुमेय पेंशन
May be filed	फाइल किया जाए
May be informed accordingly	तदनुसार सूचित किया जाए
May be kept in view	ध्यान में रखा जाए
May be passed for payment	भुगतान के लिए पास / पारित किया जाए
May be sanctioned	मंजूर / स्वीकृत किया जाए
May please be seen	कृपया देखें
Mentioned therein	..... में उल्लिखित
Monthly Arrears Statement	मासिक बकाया विवरण
N	
Necessary action may be taken/initiated	आवश्यक कार्रवाई की जाए/प्रारंभ की जाए
Next below rule	ठीक निचला नियम
No action required	किसी कार्रवाई की आवश्यकता नहीं
No demand certificate	बेबाकी प्रमाण-पत्र
Non admissibility of pension	पेंशन की अस्वीकार्यता
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाण-पत्र
Noted for future guidance	भावि मार्गदर्शन के लिए नोट किया गया
Notes and orders at page …may please be seen in this connection	इस संबंध में पृष्ठ... पर दिए गए आदेशों और टिप्पणियों के कृपया देख लिया जाए
Not transferrable	अहस्तांतरणीय
O	
Obtain formal sanction	औपचारिक मंजूरी / स्वीकृति प्राप्त करें
Office copy and fair copy for signature	कार्यालय प्रति और स्वच्छ प्रति हस्ताक्षरार्थ
Office to note and comply	कार्यालय ध्यान दे और पालन करे
On compassionate grounds	अनुकंपा के आधार पर
On perusal of the application	आवेदन पत्र का अवलोकन करने पर / देखने पर
On probation	परिवीक्षाधीन
On verification it was found that	सत्यापन पर मालूम हुआ कि
Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए
Outstanding bill	बकाया बिल
P	
Paper under consideration	विचाराधीन काग़ज़
Passed for payment	भुगतान के लिए पास / पारित
Pending adjustment	समायोजन होने तक
Placed at the disposal of	को सौंपा गया, को सुलभ किया गया

Please discuss/speak	कृपया चर्चा / बात करें
Please sign in Hindi	कृपया हिंदी में हस्ताक्षर करें
Please inform accordingly	तदनुसार सूचित करें
S	
Sanctioned	स्वीकृत/मंजूर
Submitted for approval	अनुमोदन के लिए प्रस्तुत
Submitted for information	सूचना के लिए प्रस्तुत
Submitted for orders	आदेश के लिए प्रस्तुत
Submitted for perusal	अवलोकन के लिए प्रस्तुत
Seen, thanks	देख लिया, धन्यवाद
T	
The matter is under consideration	मामला विचाराधीन है
The required papers are placed below	अपेक्षित काग़ज़ात नीचे रखे जाते हैं
This requires administrative approval	इसके लिए प्रशासनिक अनुमोदन अपेक्षित है
To the best of knowledge and belief	जहां तक पता है और विश्वास है
To whomsoever it may concern	सभी संबंधितों को/जिस किसीसे संबंधित हो
U	
Under his signature and seal	उनके हस्ताक्षर एवं मुहर सहित
Under intimation to this office	इस कार्यालय को सूचित करते हुए
Undersigned is directed to acknowledge the receipt of your letter no…. dated ….	अधोहस्ताक्षरी को निर्देश हुआ है कि आपके पत्र …. दिनांक …. की पावती भेजी जाए।
Under the auspices of	के तत्वावधान में
Until further orders	अगले आदेश होने तक
V	
Verification of service	सेवा का सत्यापन
Verified and found correct	पड़ताल की और ठीक पाया
W	
With immediate effect	तात्कालिक प्रभाव से, तत्काल से
Y	
You are hereby informed that	आपको इसके द्वारा सूचित किया जाता है कि
You may take necessary action	आप तदनुसार कार्रवाई करें
Yours faithfully	भवदीया/भवदीय
Z	
Zone of consideration	विचार परिधि

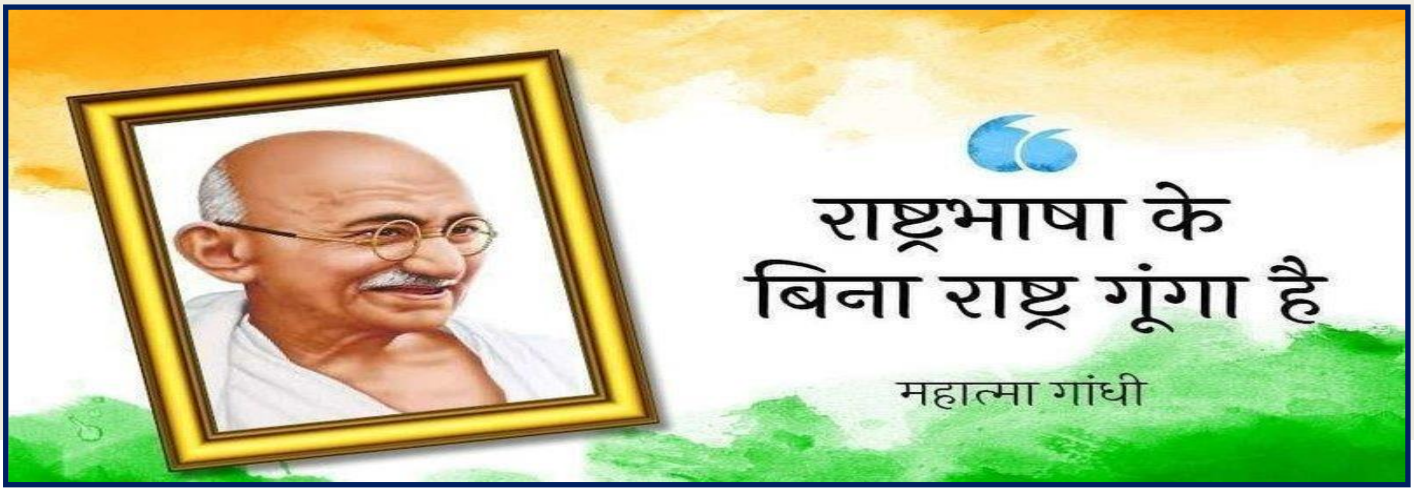

ओणम

गणतंत्र
दिवस
CONSTITUTION OF INDIA

OFFICE OF
ACCOUNTANT GENERAL
KERALA

कैंसर जागरूकता कक्षा के दृश्य

भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग दक्षिण क्षेत्र क्रिकेट टूर्नामेंट के चैंपियन

14 सितंबर
क
हिंदी
दिवस
ख

हिन्दी पखवाड़ा समारोह - 2019
HINDI FORTNIGHT CELEBRATIONS - 2019
02.09.2019 से 18.09.2019 तक
महालेखाकारों के कार्यालय, केरला, तिरुवनंतपुरम
OFFICES OF THE ACCOUNTANTS GENERAL, KERALA, THIRUVANANTHAPURAM

HINDI FORTNIGHT CELEBRATIONS - 2019

शाखा कार्यालय, तृश्शूर में हिंदी पखवाड़ा समारोह के दृश्य

शाखा कार्यालय, कोषिकोड़ में हिंदी पखवाड़ा समारोह के दृश्य

पेंशन अदालत के दृश्य

'क', 'ख' और 'ग' क्षेत्र में हिंदी

राजभाषा नियम, 1976 के अनुसार हिन्दी बोले जाने और लिखे जाने की प्रधानता के आधार पर संपूर्ण भारतवर्ष को तीन क्षेत्रों में बाँटा गया है : 'क' क्षेत्र, 'ख' क्षेत्र एवं 'ग' क्षेत्र। 'क' क्षेत्र के अंतर्गत वे राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र आतें हैं जहाँ की बोली ही हिंदी है। 'ख' क्षेत्र में वे राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र आते हैं जहाँ की भाषा हिंदी न होने के बावजूद अधिकतर स्थानों में हिंदी बोली और समझी जाती है और 'ग' क्षेत्र के अंतर्गत वे राज्य एवं संघ राज्य क्षेत्र आतें हैं जहाँ की बोली हिंदी न होकर उनकी प्रांतीय भाषा हैं।

भारत के राज्यों में बोली जानेवाली भाषाएँ/बोलियाँ

क्र.सं.	राज्य	बोली जानेवाली भाषा
1.	आंध्र प्रदेश	तेलुगु
2.	अरुणाचल प्रदेश	अंग्रेज़ी, नेपाली
3.	असम	असमिया, नेपाली, बोड़ो
4.	बिहार	हिंदी, मौथिली , भोजपुरी
5.	छत्तीसगढ़	हिंदी, छत्तीसगढ़ी
6.	गोवा	कोंकणी, मराठी
7.	गुजरात	गुजराती, सिंधी
8.	हरियाणा	हिंदी, हरयाणवी
9.	हिमाचल प्रदेश	हिंदी, डोगरी
10.	जम्मू-कश्मीर	कश्मीरी, उर्दू, डोगरी
11.	झारखंड	हिंदी, मैथिली, संथाली
12.	कर्नाटक	कन्नड, संस्कृत
13.	केरल	मलयालम
14.	मध्य प्रदेश	हिंदी, सिंधी
15.	महाराष्ट्र	मराठी
16.	मणिपुर	मणिपुरी
17.	मेघालय	अंग्रेज़ी, बोड़ो
18.	मिजोरम	मिजो, अंग्रेज़ी, हिंदी
19.	नागालैंड	अंग्रेज़ी
20.	ओडीशा	ओड़िया, संथाली
21.	पंजाब	पंजाबी
22.	राजस्थान	हिंदी, सिंधी
23.	सिक्किम	नेपाली
24.	तमिलनाडु	तमिल
25.	तेलंगाना	तेलुगु और उर्दू
26.	त्रिपुरा	बंगाली, अंग्रेज़ी, कोकबोरोक
27.	उत्तराखंड	हिंदी
28.	उत्तर प्रदेश	हिंदी, उर्दू
29.	पश्चिम बंगाल	बंगाली, संथाली

केरल का मानचित्र

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल के प्रधान कार्यालय एवं शाखा कार्यालयों के स्थान

शाखा कार्यालय, कोषिकोड़
प्रधान कार्यालय से दूरी 414 कि.मी

शाखा कार्यालय, तृश्शूर
प्रधान कार्यालय से दूरी 295 कि.मी

शाखा कार्यालय, एरणाकुलम
प्रधान कार्यालय से दूरी 218 कि.मी

शाखा कार्यालय, कोट्टयम
प्रधान कार्यालय से दूरी 165 कि.मी

प्रधान कार्यालय, तिरुवनंतपुरम

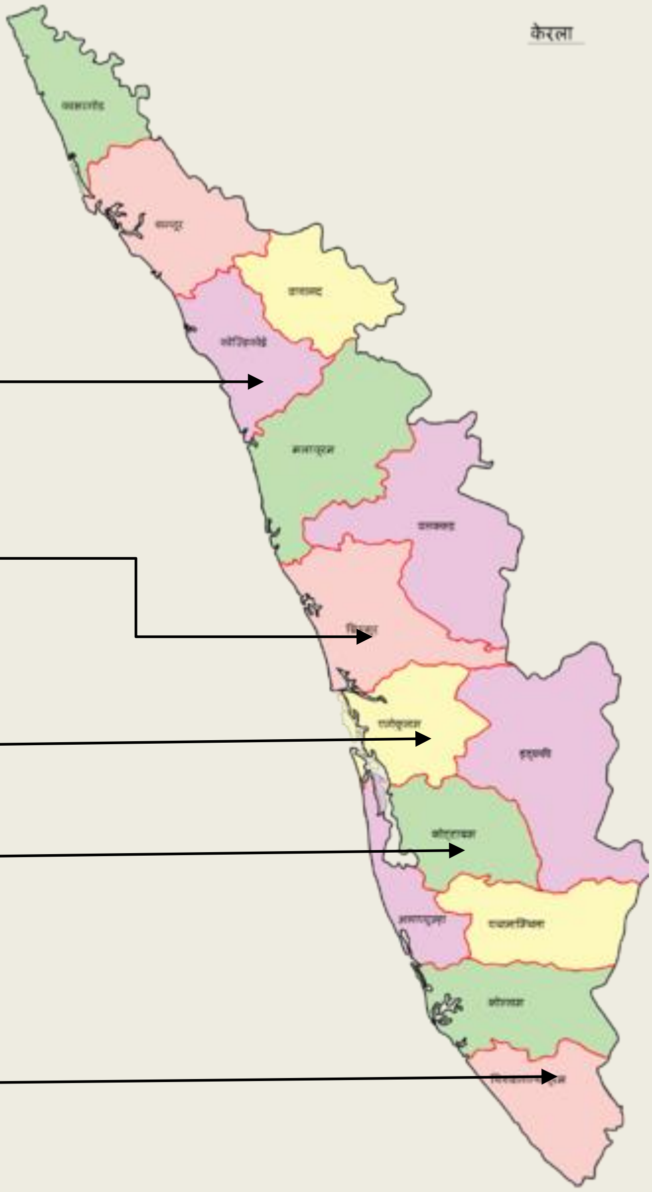

लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

प्रकाशक

प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), केरल